STS

Department of Sociology

Science Technology and Society

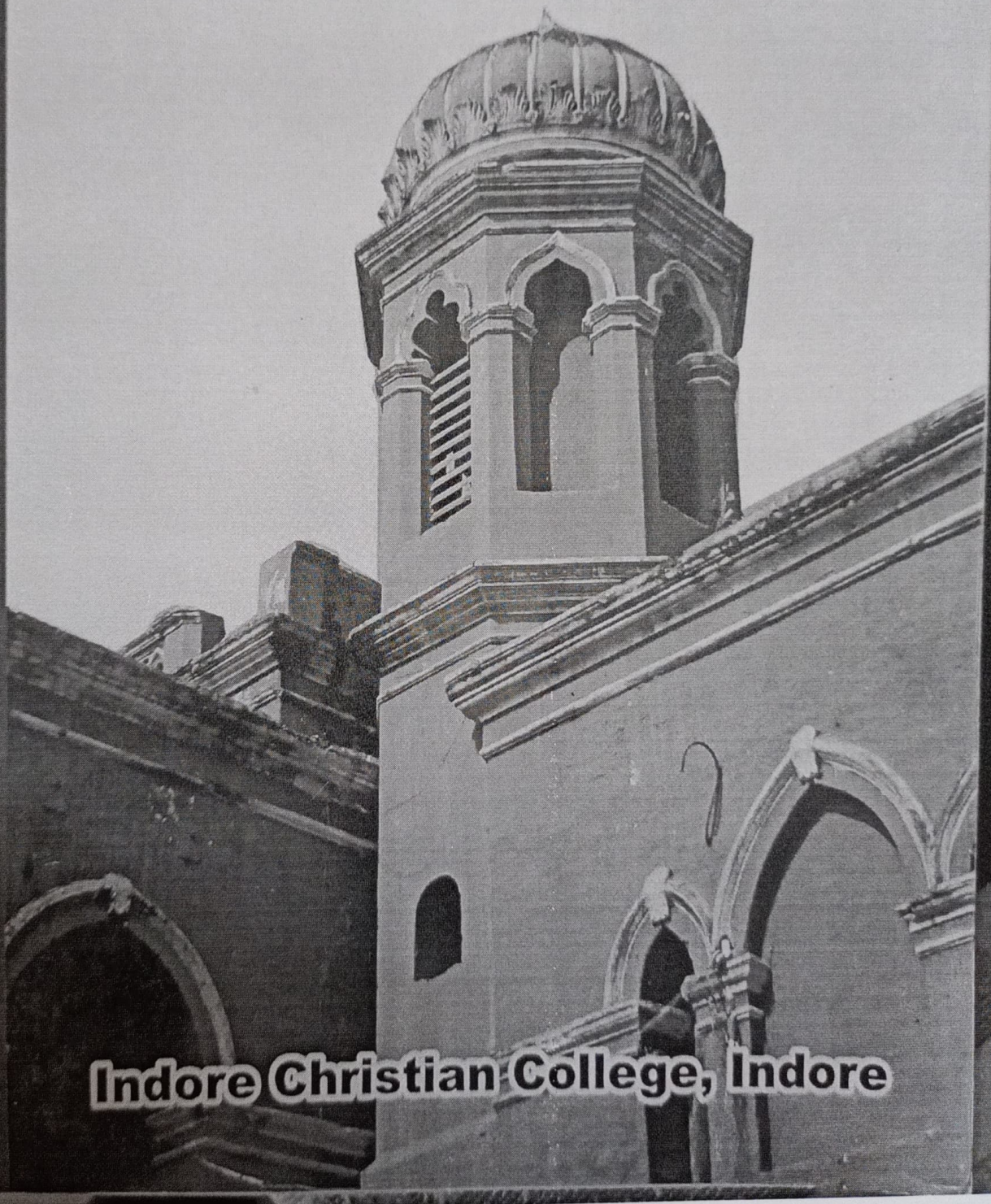

Indore Christian College, Indore

Scanned by TapScanner

First Impression : 2018

© Editor

International Conference on Science Technology and Society

ISBN : 978-81-931421-2-7

Editorial Board

Prof. Yashpal Vyas Ph.D.
Prof. Deepak Dube Ph. D.
Prof. Pankaj Virmal Ph.D.
Prof. Ashok Sachdeva Ph.D.
Prof. Arvind Pal Ph.D.
Prof. Seema Vyas Ph.D.
Prof. Bharti Sharma Ph.D.
Prof. Amod Sharma Ph.D.
Prof. Lavina Ahuja
Prof. Saurabh Gurjar

Disclaimer

The opinions expressed in the book are the opinions of the authors. The Editor/ members of the Editorial Board or the Publishers are in no way responsible for the opinions expressed by the authors.

Publisher:

Gaurav Prakashan
University Road, Rewa M. P.

Department of Sociology
Indore Christian College
Indore – 452001
India.

Typeset by :

Rambabu Soni

Printed by :

Shrirang Offset, Indore
123, Devi Ahilya Marg, Jail Road
(Sharmshiver), Indore
Mob. : 9303221400, Ph. : 0731-4202843

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय / लेखक	पृष्ठ क्र.
1.	सूचना प्रौद्योगिकी से बदलता सामाजिक परिवेश / डॉ. सुलभा काकिर्डे	1
2.	सूचना प्रौद्योगिकी और युवाओं में नशा / डॉ. अकबर खान	2
3.	विज्ञान, समाज, और साहित्य / डॉ.इन्दुबाला मालवीया	4
4.	सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी / डॉ0 सरोज यादव, नवीन कुमार यादव	5
5.	परिवार नियोजन की वैज्ञानिक प्रासंगिकता व सामाजिक परिदृश्य / डॉ. आरती व्यास,, सुभाष कुमार दाँगी	7
6.	शिक्षा एवं सूचना प्रौद्योगिकी / श्रीमती सुनीता श्रीवास्तव	9
7.	"भील जनजाति में परम्परागत चिकित्सा : एक वैज्ञानिक विश्लेषण" / डॉ. मीना जैन, प्रो. मीना मावी	10
8.	गंदी–बस्ती के बच्चों की सामाजिक समस्याओं का अध्ययन और प्रौद्योगिकी विकास / सुधा वर्मा	12
9.	मोदी सरकार की नीति – समग्र चिंतन / डॉ0 एस.के.पारे, डॉ. किशोर एरडे	15
10.	विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं समाज / डॉ. श्रीमती प्रवीण शर्मा	16
11.	प्रौद्योगिकी विकास की महिला सशक्तिकरण मे उपादेयता / डॉ. सुधा लाहोटी	18
12.	1857 के पश्चात् आवागमन एवं संचार के साधनो में उत्पन्न परिस्थितियों में ब्रिटिश हस्तक्षेप का स्वरूप, भारत में नवीन तकनीकी का उदय / डॉ. पंकज मालवीय	19
13.	विज्ञान, साहित्य और समाज / डॉ. श्रीमती पारसमणि गुप्ता	20
14.	महाराजा मल्हारराव (होल्कर) द्वितीय के मंत्री तात्या जोग का राज्य की आर्थिक समृद्धता में योगदान / डॉ. रीना मुजाल्दे	22
15.	उद्योगोंके विकास में उच्च प्रौद्योगिकी की भूमिका भारतीय परिप्रेक्ष्य के संदर्भ में एक समाजशास्त्रीय अध्ययन / कु सपना बडोले	24
16.	भारत मे प्रबुद्व नगर (स्मार्ट शहर) राजस्थान के विषेष सन्दर्भ में / गजेन्द्र कुमार मालवीया	26
17.	विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का समाज पर दुष्प्रभाव / डॉ. चारूलता तिवारी	28
18.	विज्ञान–तकनीक द्वारा युध्द विकास एंव मानवी सुरक्षा / डॉ. भांगे चंद्रकांत बन्सीधर	30
19.	विधि व्यवसाय : समाज वैज्ञानिक अध्ययन की समस्यायें / डॉ. अरूण कुमार उपाध्याय	32
20.	भारतीय ग्रामीण संरचना पर सूचना प्रौद्योगिकी का प्रभाव / डा0 जीवन कुमार, श्रीमती रामदुलारी	32
21.	विज्ञान और प्रौद्योगिकीः एक सामाजिक दृष्टिकोण / डॉ. अर्चना सिसोदिया	35
22.	संस्कृति और विज्ञान / डॉ. संगीता शर्मा	37
23.	तकनीकि का बालकों के सामाजीकरण पर प्रभाव / डॉ. रेणुका उपाध्याय	39
24.	समाज में परिवार की प्रासंगिकता / डॉ. (श्रीमती) इला घोष, प्रो. गजराजसिंह मर्सकोले	40
25.	महाराजा यशवंतराव होलकर (द्वितीय)की शैक्षणिक नीति / डॉ. उषा देवड़ा पति श्री नवनीत गोयल	41
26.	प्रौद्योगिकी का संस्कृति पर प्रभाव / डॉ. श्रीमती वन्दना बर्वे, प्रो. रविन्द्र बर्वे	42
27.	प्रौद्योगिकी और हम / डॉ शकुन शुक्ला, रफअत अफरोज़ खान	43
28.	प्रौद्योगिकी की भूमिका : उत्तराधिकार के नियम एवं पितृसत्तात्मक समाज / डॉ सुनीता	45
29.	"विज्ञान प्रौद्योगिकी एवं सामाजिक परिवर्तन" / डॉ. त्रिपतकौर चावला, सुरेन्द्रसिंह बामनिया	47
30.	"भारत में सूचना प्रौद्योगिकी एवं विकलांगजनों का सशक्तीकरण" / डॉ शोभा सुद्रास, बाबूलाल कुम्हारे	48
31.	"विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का भारतीय समाज पर प्रभाव" / डॉ सुधा सिलावट, प्रकाश एस्के	50
32.	साहित्य जिज्ञासा और विज्ञान / डॉ. संगीता पाठक	51
33.	विज्ञान, समाज और साहित्य / डॉ. हेमलता चौहान, दिलीप सिंह सिसोदिया	52
34.	प्रौद्योगिकी और सम्प्रेषण कौशल "तकनीकी दक्षता–नेम, फेम और मनी का जुनून" / डॉ. तृष्णा शुक्ला	53
35.	भारत में सुदूर संवेदन तकनीक का अध्ययन / डॉ. राजाराम आर्य	57
36.	महिला शौचालयों की समस्या : बायोटॉयलेट एक समाधान / श्रीमती मनीषा दंडवते	60
37.	"भिलाला जनजाति लोकगीत का अध्ययन" / डॉ. मनीषा सिंह मरकाम, बिरज मुवेल	61
38.	"प्रौद्योगिकी विकास द्वारा कृषि क्षेत्र में परिवर्तन" / डॉ. आरती कमेड़िया, शिवा पटेल	62
39.	"गाँवों में जनसंचार के क्षेत्र में तकनीकी क्रान्ति एक समाजशास्त्रीय अध्ययन" / कु. सरिता बडोले	63
40.	सूचना सम्प्रेषण तकनीकी और षिक्षा की गुणवत्ता / डॉ.साधना देवेश वर्मा, किरण पवार	65
41.	ई–शासन से बढ़ता ग्रामीण भारत / डॉ. अंजली जोशी	67
42.	आधुनिक भारत में पारसी समाज की जनसंख्यात्मक प्रवृत्तियाँ / डॉ. आमोद शर्मा	70
43.	आदिवासी महिला समुदाय : भाषायी पक्ष / डॉ. संध्या जैन	72

क्र.	विषय / लेखक	पृष्ठ क्र.
92.	महिला अपेराधों को रोकने में विज्ञान एवं तकनीकी की भूमिका / बृजेन्द्र सिंह	153
93.	सतत् विकास वर्तमान समाज की अनिवार्य आवश्यकता / उमाशंकर कतरौलिया	154
94.	जनजाति समुदाय एव प्रौद्योगिकी हस्तांतरण / डॉ. जुलियट ओकार	155
95.	मांडव की जल संरचनाएं: तत्कालीन समाज की आवश्यकता को पूर्ण करने की तकनीकें / डॉ. क्रांति चतुर्वेदी	157
96.	विज्ञान, समाज एवं साहित्य मे निहित हिन्दी भाषा: एक अध्ययन / लवन सिह कंवर	160
97.	भारत में बैंकों का विकास एक अध्ययन / डॉ सुनील मोरे, गोपाल कुरील	161
98.	"विज्ञान और तकनीकी विकास" / डॉ. कल्पना कोठारी	162
99.	"ग्रामीण समाज मे आए बदलावों मेंतकनीकी विकास की भूमीका" / डॉ. रितेश महाड़िक, डॉ. त्रिपत कौर चावला	164
100.	"पर्यावरण सामाजिक चेतना मे जैव – विविधता संरक्षण की भूमिका / संजीव दौहरे	165
101.	आदिपुराण में काव्यशास्त्रीय तत्त्व / डॉ. संगीता मेहता	169
102.	कौशल्या बैसत्री दोहरा अभिशाप भोगती दलित स्त्री की पीड़ा / डॉ. (श्रीमती) संगीता निर्वेल	171
103.	"श्रीमद्भागवत महापुराण में 'रीति' का विश्लेषण" / डॉ. गोपालकृष्ण शर्मा, जितेन्द्र ठाकुर	173
104.	धार जिले की जनसंख्यात्मक स्थिति का अध्ययन / डॉ. भूरेसिंह सोलंकी	174
105.	विज्ञान प्रौद्योगिकी एवं समाज : प्राचीन भारतीय इतिहास के संदर्भ में / डॉ. शेखर ब्रम्हने	175
106.	शिक्षा तकनीकी / श्रीमती निधि मनीष मोदी	177
107.	महिला और मानव अधिकार मध्यप्रदेश राज्य में लापता बालिकाओं के संदर्भ में / डॉ. श्रीमती संजू गांधी, राजेन्द्र सिसोदिया	179
108.	"ग्रामीण विकास में महिलाओं की भूमिका" / कु. बसंता सोलंकी	181
109.	मंदसौर जिले की ग्रामीण साक्षरता में भिन्नता का विश्लेषण / डॉ. अख्तर बानो	182
110.	"जनजातीय कृषक समाज में आधुनिक तकनीकी के उपयोग की स्थिति" / डॉ. दिनेश कुमार ढाकरिया	184
111.	वेदों में पर्यावरण–संरक्षण / बापूसिंह बघेल	186
112.	मीडिया और साहित्य / डॉ. अनूप शर्मा	187
113.	सूचना प्रौद्योगिकी, भाषा एवं भूमण्डलीकरण की चुनौतियाँ / डॉ. शषि जोषी	189
114.	"भारत में प्रोद्योगिकी के बढ़ते चरण चिकित्सा क्षेत्र के विशेश संदर्भ में" / कु. प्रभा कौषल	191
115.	युवाओं के सामाजिक सम्बन्ध निर्वहन पर मोबाइल का प्रभाव / डॉ. तैयबा खातून	192
116.	अजहर हाशमी का व्यंग्य साहित्य / डॉ. मंशाराम बघेल,	193
117.	वर्तमान परिदृष्य में भारतीय जीवन मूल्यों पर संकट ! / डॉ. शाहजाद कुरैशी, डॉ. अकीला कुरैशी	194
118.	मवासी जनजाति एवं उनकी संस्कृति / संदीप टाँक	195
119.	"महिला विकास एवं सूचना प्रोद्योगिकी की भूमिका" / रेखा रावत	196
120.	स्वच्छता अभियान को सार्थक बनाने में इन्दौर नगर पालिक निगम व टेक्नोलॉजी की भूमिका / सोनू पाल ओमप्रकाश पाल	197
121.	सामाजिक और राजनैतिक उत्थान के लिए शिक्षा एवं तकनिकी की आवश्यकता / डॉ. राजेश सोनकर	199
122.	"म.प्र. के बड़वानी जिले में कृषि उत्पादन एवं कृषि उपज मण्डी में कृषि विपणन" / सुनीता सोलंकी	200
123.	विधि व्यवसाय : समाज वैज्ञानिक अध्ययन की समस्यायें / डॉ. अरूण कुमार उपाध्याय	202
124.	राजेन्द्र यादव के उपन्यास साहित्य में बिम्ब एवं प्रतीक योजना / डॉ. रविन्द्र पवार	205
125.	प्रोद्योगिकी एवं ग्रामीण विकास / डॉ. शैलजा दुबे	206
126.	महिला और मानव अधिकार मध्यप्रदेश राज्य में लापता बालिकाओं के संदर्भ में / डॉ.श्रीमती संजू गांधी, राजेन्द्र सिसोदिया	208
127.	पंचायती राज का अनुसूचित जनजाति की महिला प्रतिनिधियों के सामाजिक–आर्थिक जीवन पर होने वाले प्रभाव / डॉ. चमका गेहलोद	210
128.	"नागार्जुन के कथा साहित्य में ग्रामीण जीवन के विविध सरोकार" / डॉ0 पंकज विरमाल, राजेश कुमार यादव	212
129.	"समाज एवं साहित्य मे सम्बन्ध" / डॉ. पंकज विरमाल, सर्वेश कुमार	214
130.	कितना आवश्यक है, अभिव्यक्ति–स्वातंत्र्य ? / डॉ. कामना वर्मा	215
131.	कारपोरेट सोशल रिस्पांसबिलिटी (सी.एस.आर.) / डॉ. अर्चना गौर	215
132.	प्रौद्योगिकी और स्मार्ट सिटी (शहर) की परिकल्पना / ललन कुमार	216
133.	परिवार नियोजन का मुस्लिम महिलाओ पर प्रभाव / कुमारी गोसिया बी मोहम्मद फारूक	217
134.	महिला जीवन सम्वर्द्धन और प्रौद्योगिकी विकास : एक सिंहावलोकन / डॉ. अलका रस्तोगी	219
135.	बाल श्रम की गंभीरता– एक विश्लेषण / श्रीमति योगासना कचोले, पाराशर	221
136.	महिला नेतृत्व एवं पंचायती राज / प्रो. भारती शर्मा पीएच.डी	222
137.	महाकवि भास के रामायण कथाकित नाटकों मे नाट्यतत्व / माधुसिंह माली	224
138.	जनजातीय राजनैतिक चेतना का ग्रामीण विकास पर प्रभाव / कृष्णकांत खोड़े	225
139.	ग्रामीण एवं नगरीय भील जनजाति की महिलाओं में शिक्षा के प्रति जागरूकता / डॉ. सविता बघेल	226
140.	व्यवसायिक शिक्षा के प्रति छात्र–छात्राओं का दृष्टिकोण / डॉ. निशा निमावत	227

विज्ञान, समाज एवं साहित्य में निहित हिन्दी भाषाः एक अध्ययन

–लवन सिंह कंवर

राष्ट्र की वास्तविक पहचान उसके सांस्कृतिक एवं साहित्यिक समृद्धि से होती है। समाज, संस्कृति एवं सभ्यता भी गतिशील होती है। साहित्य भाषाओं के माध्यम से मनुष्य की रचनात्मक अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम रहा है और आज भी है। इलेक्ट्रानिक माध्यम (प्रेस) के आगमन पूर्व साहित्य गेयता आधारित थी,किंतु प्रेस के आने पर साहित्य की गेयता की अनिवार्य शर्त नहीं रही। साहित्य एवं संस्कृति का भाषागत संबंध होता है,जिसका प्रभाव समाज और विज्ञान पर पड़ता है। आधुनिक युग में ज्ञान– विज्ञान के विविध क्षेत्रों में अनेक अनुसंधान एवं चिंतन–मनन हो रहा है। फलस्वरूप चिंतन–मनन, ज्ञान के प्रसारण,सम्प्रेषण हेतु भाषा की आवश्यकता होती है। यदि हम समाज एवं साहित्य के लिए वास्तविक एवं स्थायी परिवर्तन चाहते हैं,तो अस्त्र–शस्त्रों की आवश्यकता न होकर वैचारिक क्रांति की जरूरत होती है। भावी पीढ़ियों को हिंदी भाषा और देवनागरी लिपि के सहज,सरल एवं ग्राह्य वैज्ञानिक स्वरूप को त्रुटिरहित सीखने हेतु सरकार को प्राथमिक शिक्षा से ही शिक्षण माध्यम में क्षेत्रीय भाषा के अनुकुल बोली आधारित भाषा को मान्यता प्रदान कर आमूलचूल परिवर्तन करने होंगे। क्योंकि वैश्विक स्तर पर लोग हिंदी को प्रथम से लेकर तीसरे स्थान पर रखते हैं। हिन्दी भाषा एवं साहित्य के दृष्टिकोण एवं भाषा की बेहतरी के लिए हमें बेहतर समन्वय की नितांत आवश्यकता है।

राष्ट्र की वास्तविक पहचान उसके सांस्कृतिक एवं साहित्यिक संसार से होती है,जिसमें समाज में अंतर्निहित भाषा व्यवहार के वैज्ञानिक प्रयोग से मनुष्य की वास्तविक विकास स्वमेव परिलक्षित होती है। समाज एक गतिशील प्रतिमान है फलस्वरूप इसमें परिवर्तन होते ही रहते हैं। समाज के समान ही संस्कृति एवं सभ्यता भी गतिशील होती है। साहित्य भाषाओं के माध्यम से मनुष्य की रचनात्मक अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम रहा है और आज भी है। इलेक्ट्रानिक माध्यम (प्रेस) के आगमन पूर्व साहित्य गेयता आधारित थी,किंतु प्रेस के आने पर साहित्य की गेयता की अनिवार्य शर्त नही रही। साहित्य एवं संस्कृति का सीधा संबंध भाषा से जुड़ा होता है,जिसका सीधा प्रभाव समाज और विज्ञान पर पड़ता है। भाषा के बदलते हुए स्वरूप और मौजूदा हालात को ध्यान में रखते हुए वर्तमान वैज्ञानिक समाज में साहित्य की सृजनशीलता को तराशना अत्यंत आवश्यक है। हिन्दी भाषा को उभारने एवं आम जन–जन तक सुगमता से पहुंचाने सरकार ने नये–नये प्रयोग किए हैं,किंतु विदेशी भाषा का हस्तक्षेप जो पिछले कई दशकों से भारत में होता आ रहा है,यह हमारी राष्ट्र की उन्नति के लिए घातक है। साहित्य में भी अवलोकन करने पर हम पाते हैं कि भारतेन्दु युग का साहित्य जनवादी इस अर्थ में है कि वह भारतीय समाज के पुराने ढाँचे से संतुष्ट न रहकर उसमें सुधार भी चाहता है। द्विवेदी युग ने ज्ञान (विज्ञान) की साधना पर विशेष बल दिया। शुक्ल युग में व्यक्ति धर्म के स्थान पर लोकधर्म को श्रेयस्कर बताया। साहित्य में जीवन को और जीवन में साहित्य को प्रतिष्ठापित किया। आधुनिक युग में ज्ञान– विज्ञान के विविध क्षेत्रों में अनेक अनुसंधान एवं चिंतन–मनन हो रहा है। वहीं चिंतन–मनन, ज्ञान के प्रसारण,सम्प्रेषण आदि के लिए भाषा की आवश्यकता है।

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि वास्तविक एवं स्थायी परिवर्तन यदि हम समाज एवं साहित्य के लिए चाहते है,तो अस्त्र–शस्त्रों की आवश्यकता न होकर वैचारिक क्रांति की जरूरत होती है। दुष्यंत कुमार ने भी अपनी गजल कविता संग्रह 'साये में धूप' में स्पष्ट लिखा है,कि

"सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं, मेरा मकसद है कि ये नक्शे–सूरत बदलनी चाहिए। मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में ही सही, हो कहीं भी आग तो आग जलनी चाहिए।।"

किसी भी राष्ट्र का ठोस निर्माण किसी बाहरी भाषा के बल पर कदापि संभव नहीं है। महाकवि पी.कुंजिर के अनुसार–'दुन्निया भर में भारत को छोड़कर कोई ऐसा देश नही मिलेगा जहाँ एक विदेशी भाषा के माध्यम से शिक्षा दी जाती है।' वही काका कालेलकर ने भी कहा है कि 'अंग्रेजी भारत के राजकाज की भाषा नहीं हो सकती है।' किंतु तीव्र गति से बदलते हुए देश,काल एवं सामाजिक परिवेश को ध्यान में रखकर वर्तमान वैज्ञानिक समाज की भाषायी अखंडता एवं राष्ट्र की साहित्यिक अस्मिता को सुरक्षित रखने हेतु समन्वय का मार्ग अपनाना पड़ेगा,क्योंकि हम सभी जानते है कि अंगेजी भाषा का भारत मे बढ़ता हुआ वर्चस्व चिंता का विषय बन चुका है। राष्ट्र के डेढ से तीन प्रतिशत अंग्रेजी भाषा के समर्थक आतंक की स्थिति पैदा कर माहौल बनाकर प्रचारित कर रहे हैं कि अंगेजी भाषा के बिना हम जिंदा नहीं रह सकते। परिणामस्वरूप इस समय भारतीय भाषा संस्कृति के तत्वावधान में 12 भारतीय भाषाओं और छह विदेशी भाषाओं में पठन–पाठन का काम हो रहा है। देश की आजादी के इतने साल बाद भी जो हमारी भाषायी दशा है वह क्यों है और इसमें सुधार लाने के लिए क्या उपाय किए जा सकते है,इस पर विचार–मंथन करने की नितांत आवश्यकता है। सातवीं शताब्दी में अपभ्रंश से उत्पन्न हिंदी भाषा नागरी लिपि विश्व की सबसे अधिक वैज्ञानिक ध्वन्यात्मक लिपि के रूप में स्वीकार्य है,वही वैश्विक स्तर पर लोग हिंदी को प्रथम से लेकर तीसरे स्थान पर रखते है।

सातवें विश्व हिंदी सम्मेलन सूरीनाम में श्री केशरीनाथ त्रिपाठी अपने व्याख्यान में कहा था कि "यह सम्मेलन इस बात का खेद प्रकट करता है कि विश्व में बोली जाने वाली दूसरी सबसे बड़ी भाषा हिंदी जिसका प्रयोग लगभग 180 देशों में 80 करोड़ लोगों के द्वारा किया जाता है अभी तक संयुक्त राष्ट्र की भाषा नहीं बन सकी।" भावी पीढ़ियों को हिंदी भाषा और देवनागरी लिपि के सहज,सरल एवं ग्राह्य वैज्ञानिक स्वरूप को त्रुटिरहित सीखने हेतु सरकार को प्राथमिक शिक्षा से ही शिक्षण माध्यम में क्षेत्रीय भाषा के अनुकुल बोली आधारित भाषा को मान्यता प्रदान कर आमूलचूल परिवर्तन करने होंगे। तभी वर्तमान वैज्ञानिक समाज मे हिन्दी भाषा का साहित्य उत्तरोत्तर उन्नति के पथ पर अग्रसर होगा और हिन्दी भाषा की दशा एवं दिशा में सुधार संभव होगी। हिन्दी भाषा के प्रति ऐसा ही भाव कवि श्री रामधारी सिंह दिनकर के काव्य में देखने को मिलता है कि–

"न तो भूत का मित्र, न भावी का ही द्रष्टा हूँ।
दोनों में चल रहा द्वन्द्व जो, मैं उसका द्रष्टा हूँ।।"

वैश्वीकरण के इस दौर में साहित्य और समाज में घनिष्ट संबंध होने के बाद भी लोगों की सहानुभूति अंग्रेजी के साथ है और हिंदी भाषा के साथ सौतेला व्यवहार हमेशा देखने को मिलता है तभी तो अज्ञेय की 1970 ई० की कविता 'क्योंकि मैं उसे जानता हूँ' में मुक्ति के लिए संदेश है–

'अपनी हर साँस को के साथ,
पनपते इस विश्वास के साथ कि हर दूसरे की हर साँस को
हम दिला सकेंगे और अधिक सहजता।"

समाज में हिन्दी भाषा के संवर्धन और विकास हेतु साहित्य रचना को प्रचारित,प्रसारित एवं प्रोत्साहित करने हेतु संवैधानिक,सामाजिक
शैक्षणिक अवसर उपलब्धता सुनिश्चित करने हम सभी भारतीयों को आगे आकर हिन्दी भाषा का संवाहक बनना पड़ेगा,तभी हिन्दी भाषा
उन्नत शिखर प्राप्त होगा। हमें अपने कर्त्तव्य में इस सम्मान को शामिल करने की नितांत आवश्यकता है,यही समय की माँग है। किसी
कवि ने भी प्रेरणा काव्य में कहा है कि–

"एक अकेले से कुछ नहीं होता,बोझ सब साथियों से उठता है।
जिसको कहते हैं हम एक तिनका, वो भी तो दो उंगलियों से उठता है।।"